महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृत विभाग

एम. ए. द्वितीय सत्र

विषय – उत्तररामचरित

Code – SNKT2002

प्रथम अङ्क- II

विश्वजित वर्मन
सहायक-आचार्य, संस्कृत विभाग
biswajitbarman@mgcub.ac.in

एतानि तानि गिरिनिर्झरिणीतटेषु
वैखानसाश्रिततरुणि तपोवनानि।
येष्वातिथेयपरमा यमिनो भजन्ते
नीवारमुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि॥

अन्वय

गिरिनिर्झरिणीतटेषु वैखानसाश्रिततरूणि एतानि तानि तपोवनानि, येषु आतिथेयपरमा नीवारमुष्टिपचना यमिनो गृहिणो गृहाणि भजन्ते।

शब्दार्थ

गिरिनिर्झरिणीतटेषु- पहाड़ी नदियों के किनारे, वैखानसाश्रिततरूणि – वानप्रस्थियों से सेवित पादपों वाले, एतानि- ये, तानि – वे, तपोवनानि- तपोवन है, येषु- जहाँ, आतिथेयपरमा- अतिथि सत्कार में निरत, नीवारमुष्टिपचना- नीवारधीन का मुष्टि पकाने वाले, यमिनो- संयमी, गृहिणो- गृहस्थ, गृहाणि- घरों में, भजन्ते- निवास करते हैं।

अर्थ

पर्वतीय नदीयों के किनारे तथा वानप्रस्थियों से सेवित पादपों वाले, ये वे तपोवन है, जिनमें अतिथि संत्कार के लिए निरत और नीवार धान की मुष्टि पकाने वाले संयमी गृहस्थ घर बनाकर रहते है।

समास

गृहिणः- गृहाणि सन्ति येषां, ते।
यामिनः- यमः सन्ति एषामिति।
आतिथेयपरमा- अतिथिषु साधु आतिथेयम्, तत् परमं येषां ते।
नीवारमुष्टिपचनाः- नीवारमुष्टेः पचनं येषां ते।

अलङ्कार

इस पद्य में उदात्तालङ्कार है। (उदात्तं वस्तुनः सम्पत्) जहां किसी वर्ण्यवस्तु के प्रसङ्ग में महापुरुषों का वर्णन किया जाता है वहां उदात्तालङ्कार होता है। इस श्लोक में महीपुरुषों का वर्णन हैं।

गुण- प्रसाद

शुष्केन्धनाग्निवत् स्वच्छजलवत्सहसैव यः। व्यप्नोत्यन्यत्प्रसादोऽसौ सर्वत्र विहितस्थितिः॥

रीति- लाटी रीति

छन्द - वसन्ततिलक

इस पद्य में वसन्ततिलक छन्द है।(उक्ता वसन्ततिलका तभजाजगौ गः)

विशेष

- यमः – अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यपरिग्रहाः यमाः।
- इस पद्य में वानप्रस्थ आश्रम का वर्णन है।

अथेदं रक्षोभि कनकहरिणच्छद्मविधिना
तथा वृत्तं पापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै-
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्॥

अन्वय

अथ पापैः रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना इदं तथा वृत्तं यथा क्षालितमपि व्यथयति। शून्ये जनस्थाने विकलकरणैः आर्यचरितैः ग्रावा अपि रोदिति वज्रस्य हृदयं अपि दलति।

शब्दार्थ

अथ- तदनन्तर (शूर्पनखा वृत्तान्त के बाद), पापैः- दुष्टों से, रक्षोभिः- राक्षसों से, कनकहरिणच्छद्मविधिना- स्वर्णमृग के रूप में छल विधान के द्वारा, इदम्- यह (इस चित्रपट), तथा- उस प्रकार, वृत्तम्- हुआ, यथा- जैसे, क्षालितम्- धोया गया, अपि- भी, व्यथयति- पीड़ा देता है, शून्ये- निर्जन में, जनस्थाने- जनस्थान (दण्डकारण्य) में, विकलकरणैः- आकुल इन्द्रियों वाले, आर्यचरितैः- राम के (मूर्छा आदि) व्यापारों से, ग्रावा- पाषाण, अपि- भी, रोदिति- रोता है, वज्रस्य- कुलिश का, अपि- भी, हृदयम्- हृदय, दलति- फटता है।

अर्थ

तदनन्तर (शूर्पनखा वृत्तान्त के बाद) पापी राक्षसों द्वारा स्वर्णमृग के कपटविधान से ऐसा किया गया जो प्रतिकार करने पर भी व्यथित कर रहा है। निर्जन जनस्थान में विकल इन्द्रियों वाले आर्य श्रीरामचन्द्र जी के चरितों (करुण क्रन्दन आदि) से पाषाण भी विलाप करता है और वज्र का भी हृदय विदीर्ण होता है।

समास

कनकहरिणच्छद्मविधिना- कनकहरिणः एव छद्म, तस्य विधिना
विकलकरणैः- विकलानि करणानि येषु, तैः

अलङ्कर

इस पद्य में पाषाण तथा वज्र, जो कठोरता और निष्करुणता के कारण प्रसिद्ध है किन्तु हृदय विदीरण रूप में वर्णित होने के कारण अतिशयोक्ति अलङ्कार है।

छन्द

शिखरिणी छन्द है। (रसै रुद्रैच्छिन्ना यमनसभलाः गः शिखरिणी) सत्रह अक्षरविशिष्ट इस छन्द का पहला यति छठा अक्षर में एवं द्वितीय यति पादान्त (सत्रह) में है।

❑करुण रस के प्रसिद्ध कवि भवभूति का यह प्रसिद्ध श्लोक है इस श्लोक में उन्होने करुण रस का वर्णन किया है। सीता विरह से व्याथित राम का शोक से नितान्त मार्मिक व्याथा का अनुभव कर पत्थर और वज्र जैसे कठोर पदार्थ भी रोने लगा है।

विनिश्चेतुं शक्यो न सुखमिति वा दुःमिति वा
प्रमोहो निद्रा वा किमु विषविसर्पः किमु मदः ।
तव स्पर्शे स्पर्शे मम हि परिमूढेन्द्रियगणो-
विकारश्चैतन्यं भ्रमयति च सम्मीलयति च ॥

अन्वय

तव स्पर्शे स्पर्शे परिमूढेन्द्रियगणः विकारः हि मम चैतन्यं भ्रमयति सम्मीलयति च। सुखं वा दःखं वा प्रमोहो वा निद्रा वा विषविसर्पः किमु मदः किमु इति विनिश्चेतुं न शक्यः।

शब्दार्थ

तव- तेरे, स्पर्श स्पर्शे- प्रत्येक स्पर्श में, परिमुढेन्द्रियगणः- इन्द्रिय समूह को निश्चेष्ट बना देने वाला, विकारः- चित्त का अन्यथा भाव, मम- मेरे, चैतन्यम्- चेतना को, भ्रमयति- भ्रान्त कर देता है, च- और, सम्मीलयति- संकूचित कर देता है अथवा प्रकाशित कर देता है, सुखम् इति वा- यह सुख है, अथवा, दुःखम् इति वा- यह दुःख है, अथवा, प्रमोहः- मूर्च्छा, निद्रा वा- अथवा नींद है, विषविसर्पः किम्- विष का प्रसार है क्या, मदः किमु- उन्माद है क्या, विनिश्चेतुम्- निश्चय करने के लिए, न शक्यः- योग्य नहीं है।

अर्थ

तुम्हारे प्रत्येक स्पर्श में इन्द्रियसमूह को मूढ करने वाला विकार मेरे चैतन्य को विक्षुब्ध और उल्लसित करता है। (अतएव यह विकार) सुख है अथवा दुःख है, प्रमोह है अथवा निद्रा है, विष का प्रसार है अथवा भद है ? यह निश्चय नहीं किया जा सकता है।

समास

परिमूढेन्द्रियगणः- परिमूढ इन्द्रियगणः यस्मिन् सः।
परिमूढः- परितः मूढः इति
इन्द्रियगणः- इन्द्रियाणां गणः

अलङ्कार

इस श्लोक के प्रथमार्ध में सन्देह के कारण सन्देह अलङ्कार है। (सन्देहः प्रकृतेऽन्यस्य संशयः प्रतिभोत्थितः)। किन्तु कुछ आचार्यों के मत है कि राम का सीता के प्रति अत्याधिक प्रेम के कारण यहां राम का वितर्कमात्र है किन्तु सन्देह नहीं। और परार्ध में भ्रमयति सम्मीलयति इन दोनों विकारों के कारण विरोधाभास अलङ्कार है।

छन्द

इस पद्य में शिखरिणी छन्द है। (रसैः रुद्रैच्छिन्ना यमनसभला ग शिखरिणी) इसके प्रत्येक पाद में 17 अक्षर है। प्रथम 6 तथा 11 अर्थात् पादान्त मे यति है।

❑ये संभोग श्रृङ्गार रस का उदाहरण है।

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगतं सर्वास्ववस्थासु य-
द्विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः ।
कालेनावरणात्ययात्परिणते यत्प्रेमसारे स्थितं
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हि तत्प्रार्थ्यते ॥

अन्वय

यत् सुखदुःखयोः अद्वैतं, सर्वासु अवस्थासु अनुगतं, यत्र हृदयस्य विश्रामः, यस्मिन् रसः जरसा अहार्यः, यत् कालेन आवरणत्यायात् परिणते प्रेमसारे स्थितं तस्य सुमानुषस्य तत् एकं भद्रं कथमपि हि प्रार्थ्यते ।

शब्दार्थ

यत्- जो, सुखदुःखयोः- सुख तथा दुख में, अद्वैतम्- अभिन्न है, सर्वासु- सभी, अवस्थासु- (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि) अवस्थाओं में, अनुगतम्- अनुरसण करता है, यत्र- जिसमें, हृदयस्य- अन्तकरण को, विश्रामः- सुख होता है, यस्मिन्- जिसमें, रसः- आनन्द, जरसा- वृद्धावस्था, अहार्य- न हरा जा सकने वाला, यत्- जो, कालेन- समयानुसार, आवरणत्यायात्- विवाह से मृत्युपर्यन्त, परिणते- परिपक्व होता है, प्रेमसारे- स्नेह के सारभाग में, स्थितं- स्थित रहता है, तस्य- उस, सुमानुषस्य- सत्पुरुष का, तत्- वह, एकं- अनुपम, भद्रं- सौभाग्य, कथमपि- किसी प्रकार से, प्रार्थ्यते- प्रप्त किया जाता है ।

अर्थ

जो (दाम्पत्य-प्रेम) सुख और दुःख में एक रूप है, सभी अवस्थाओं में अनुसरण करता है, जिसमें हृदय को विश्राम मिलता है, जिसमें वृद्धावस्था भी अनुराग को दूर नहीं कर सकता है, जो समय पाकर आवरण के नष्ट हो जाने के कारण (लज्जा आदि संकोचों के समाप्त हो जाने के कारण) अथवा विवाह से लेकर मरणपर्यन्त परिपक्व उत्कृष्ट प्रेम में अवस्थित है, उस दाम्पत्य प्रेम का वह एक सौभाग्य किसी प्रकार (बड़े) पुण्य से प्राप्त किया जाता है।

समास

अद्वैतम्- नास्ति द्वैतं यस्मिन् तत् अद्वैतम्।
सुखदुःखयोः- सुखे च दुःखे च।
आवरणात्ययात्- वरणं च अत्ययश्च इति वरणात्ययम्, तस्मात्
सुमानुष्यम्- शोभनं मानुष्यं यस्मिन् तत्, तस्य
स्नेहसारे- स्नेहस्य सारः, तस्मिन्।

अलङ्कार

इस पद्य में प्रस्तुत (सीतायाः) के स्थान पर अप्रस्तुत (सुमानुषस्य पद) प्रयोग के कारण अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार है। (अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया)

छन्द

शार्दूलविक्रीडितवृत्तम्। (सूर्यश्वैर्मसजस्ततः गः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।)

विशेष

- इस पद्य में दाम्पत्य-प्रेम का वर्णन है। जिसमें विषय वासना का विन्दुमात्र स्थान नहीं है, जिसको वृद्धावस्था में भी वह प्रेम अटुट रखता है।
- इसमें फलविषयक औत्सुक्य का प्रतिपादन होने के कारण आरम्भ नामक कार्यावस्था है। (औत्सुक्यमात्रमारम्भः फललाभाय भूयसे)

सतां केनापि कार्येण लोकस्याराधनं व्रतम्।
यत्पूरितं हि तातेन मां च प्राणाश्च मुञ्चता॥

अन्वय

केनापि कार्येण लोकस्य आराधनं सतां व्रतम्। यत् तातेन मां च प्राणांश्च मुञ्चता पूरितम्।

शब्दार्थ

केनापि - किसी भी, कार्येण - कार्य से, लोकस्य- प्रजा का, आराधनम् – अनुरञ्जन करना, सताम् - सज्जनों का, व्रतम् - अनुष्ठान है। माम् = मुझको, प्राणान् - प्राणों को, मुञ्चता - छोड़ते हुए, तातेन - पिता जी ने , तत् - वह , पूरितम् पूरा किया है।

अर्थ

किसी भी उपाय से लोकानुरजन ही सज्जनों का व्रत है, जिसे पिता ने मुझको तथा प्राणों को छोड़ते हुए पूरा किया।

अलङ्कार

किसी भी उपाय से लोकानुरञ्जन ही सज्जनों का कार्य है इस सामान्य विषय से मुझे किसी भी उपाय से वह करना है ये विशेष विषय का अवगति के कारण अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार। (अप्रस्तुतप्रशंसा या सा सैव प्रस्तुताश्रया)

और मुझे लोकानुरञ्जन करना है इस को पिता के लोकानुरञ्जन व्रत के द्वारा समर्थन के कारण अर्थान्तरन्यास अलङ्कार भी है। (सामान्यं वा विशेषं वा तदन्येन समर्थ्यते। यत्तु ऽर्थान्तरन्यसः साधम्येणेतरेण वा॥)

माम् और प्राणान् इन दोनो प्रस्तुत विषय को मुञ्चता क्रिया के साथ सम्बन्ध होने के कारण तुल्ययोगिता अलङ्कार है। (नियतानां सकृद्धर्मः सा पुनस्तुल्ययोगिता)

छन्द- अनुष्टुप्।

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

त्वया जगन्ति पुण्यानि त्वय्यपुण्या जनोक्तयः।
नाथवन्तस्त्वया लोकास्त्वमनाथा विपत्स्यसे॥

अन्वय

त्वया जगन्ति पुण्यानि (सन्ति), त्वयि अपुण्या जनोक्तयः (सन्ति), त्वया लोकाः नाथवन्तः (सन्ति), त्वम् अनाथा विपत्स्यसे।

शब्दार्थ

त्वया- तुमसे, जगन्ति - तीनों लोक, पुण्यानि- पवित्र है, त्वयि- तुम्हारे सम्बन्ध में, जनोक्तयः-लोगों के वचन है, अपुण्याः- अपवित्र, त्वया- तुमसे, लोकाः- लोग, नाथवन्तः- सनाथ है, त्वम् - तुम, अनाथा- स्वामी से रहित, विपत्स्यसे- विपत्ति में पड़ोगी।

अर्थ

तुमसे समस्त संसार पवित्र है, (किन्तु ये संसार) तुम्हारे विषय में अपवित्र जनापवाद है। तुमसे समस्त लोक सनाथ है, (परन्तु) तुम अनाथ होकर विपत्ति में पड़ोगी।

समास

अपुण्याः- न पुण्याः

जनोक्तयः- जनानाम् उक्तयः

सनाथाः- नाथ अस्ति येषां ते

अनाथा- अविद्यमानः नाथः यस्याः सा

अलङ्कार

इस पद्य में विरोधाभास अलङ्कार है। (विरोधः सोऽविरोधेऽपि विरुद्धेन यद्वचः) जहा दो वस्तुयों में विरोध न होने पर भी विरोध की प्रतीति उत्पन्न हो जाता है। इस श्लोक में एक तरफ सीता की पवित्रता दूसरी तरफ जनापवाद इस प्ररकार विरुद्ध विषय का वर्णन होने के कारण विरोधाभास अलङ्कार है। कुछ आचार्यों के अनुसार यहा विषम अलङ्कार है।

छन्द- अनुष्टुप्।

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

विशेष- इस पद्य में त्वमनाथा विपत्ससे से सीता परित्याग का सूचना है।

दुःखसंवेदनायैव रामे चैतन्यमागतम्।
मर्मोपघातिभिः प्राणैर्वज्रकीलायितं हृदि॥

अन्वय

दुःखसंवेदनाय एव रामे चैतन्यम् आगतम्। मर्मोपघातिभिः प्राणैः हृदि वज्रकीलायितम्।

शब्दार्थ

दुःखसंवेदनाय- दुःखानुभूति के लिए, एव- ही, रामे- राम में, चैतन्यम्- चेतना, आगतम्- आ गई है, मर्मोपघातिभिः- मर्मस्थल पर प्रहार करने वाले, प्राणैः – प्राणों से, हृदि- हृदय में, वज्रकीलायितम्- कुलिश की कीलकासा आचरण हुआ है।

अर्थ

दुःखानुभूति के निमित्त ही राम में चैतन्य आ गया है। मर्मस्थल पर आघात पहुँचाने वाले प्राणों द्वारा हृदय में वज्रशङ्कु सदृश आचरण किया गया है।

समास

दुःखसंवेदनाय- दुःखस्य संवेदनं दुःखसंवेदनम्, तस्मै।
चैतन्यम्- चैतन्यस्य भावः
मर्मोपघातिभिः- मर्मणि उपघ्नन्ति इति मर्मोपघातिनः, तैः
वज्रकीलायितम्- वज्रकीलवत् आचरितमिति

अलङ्कार

राम के हृदय की गहरी पीड़ा, गंभीर दुःख और घनी व्याथा इस श्लोक में व्यक्त है। इस श्लोक के पूर्वार्ध में उत्प्रेक्षा अलङ्कार है (सम्भावनथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्) तथा उत्तरार्ध में वज्रकीलायितम् इस पद में व्यङ्ग्य के द्वारा सादृश्य के कारण उपमा (साधर्म्यमुपमा भेदे) अलङ्कार हुआ है।

अनुष्टुप- छन्द

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

विशेष

इस श्लोक में लोकाराधन की वेदिका पर स्थित राजा राम का लोकानुरञ्जन के लिए सीता परित्यग जनित हृदय की गहरी पीड़ा व्यक्त है।

जनकानां रघुणां च यत्कृत्स्नं गोत्रमङ्गलम्।
यां देवयजने पुण्ये पुण्यशीलामजीजनः॥

अन्वय

यत् जनकानां रघूणां च कृत्स्नं गोत्रमङ्गलम्, पुण्यशीलां यां पुण्ये देवयजने (त्वम्) अजीजनः।

शब्दार्थ

यत्- जो, जनकानां- जनकवंश के लोगों का, रघुणाम्- रघुवंश के लोगों का, कृत्स्नम्- सम्पूर्ण, गोत्रमङ्गलम्- कुलकल्याण, पुण्यशीलाम्- पवित्र आचरण वाली, याम्- जिसको, पुण्ये- पवित्रता में, देवयजने- यज्ञभूमि में, अजीजनः- उत्पन्न किया।

अर्थ

जो (सीता) 'जनकवंशियों' और 'रघुवंशियों' दोनों वंशों के समस्त प्रकार मंगल का प्रतीक है, और जिस पवित्र आचरण वाली (सीता) को तुमने पवित्र देवयज्ञ स्थान में उत्पन्न किया है।

समास

गोत्रमङ्गलम्- गोत्रस्य मङ्गलम्
देवयजने- देवाः इज्यन्ते यत्र तस्मिन्

अलङ्करा

इस पद्य में रूपक अलङ्कार है। (तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः) इसमें उपमेय और उपमान के वीच काल्पनिक अभेदारोप होता है।

छन्द

अनुष्टुप् है

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्। द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ॥

विशेष

इसमें विन्दु नामक अर्थप्रकृति है। (अवान्तरार्थविच्छेदे विन्दुरच्छेदकारणम्) जो कथा सूत्र को विच्छिन्न होने से रोकता है। राम का भगवती वसुन्धरा की प्रति ये उक्ति नाटक की कथावस्तु को फलप्रप्ति की ओर अग्रेसित करता है।

धन्यवाद